समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित
पाक्षिक
प्रज्ञा अभियान
संस्थापक-संरक्षक : वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा
वर्ष : २०, अंक : १   १ जुलाई २००७   शांतिकुंज, हरिद्वार.   वार्षिक चंदा रु. २४/-, विदेश में रु. ४००/- मात्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

उस प्राण स्वरूप, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करते हैं। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

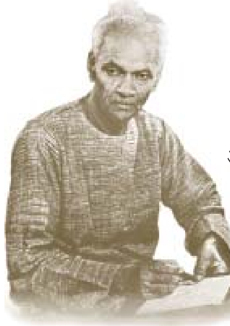

परिष्कृत प्रतिभा, एक दिव्य विभूति

इन दिनों संपदा का बहुत महत्त्व आँका जाता है, इसके बाद समर्थता, बुद्धिमत्ता आदि की गणना होती है। पर ऊँचाई की ओर नजर दौड़ाई जाए तो पता चलता है कि यदि किसी को वरिष्ठता या विशिष्टता का श्रेय मिल रहा हो, तो समझना चाहिए कि यह उसकी विकसित प्रतिभा का ही चमत्कार है। दार्शनिक, शासक, कलाकार, वैज्ञानिक, निर्माता एवं जागरूक लोगों में मात्र परिष्कृत प्रतिभा का ही चमत्कार दीखता है। साहसिकता उसी का नाम है। दूरदर्शिता, विवेकशीलता के रूप में उसे जाना जा सकता है। इसी प्रतिभा का अर्जन सच्चे अर्थों में वह वैभव समझा जाता है, जिसे पाकर गर्व और गौरव का अनुभव किया जाता है। शक्ति की सर्वत्र अभ्यर्थना होती है, पर यदि उसका बहुमूल्य अंश खोजा जाए, तो उसे प्रतिभा के अतिरिक्त और कोई नाम नहीं दिया जा सकता है। विज्ञान उसी का अनुयायी है। संपदा उसी की चेरी है।

> क्रांतिधर्मी साहित्य सेट की पुस्तक
> 'महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण' से सम्पादित

व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा परिष्कार है। व्यक्तित्ववान अनेकों का स्नेह, सहयोग, परामर्श एवं उपयोगी सान्निध्य प्राप्त करते चले जाते हैं। यह निजी पुरुषार्थ है। अन्य सुविधा-साधन तो दूसरों की अनुकम्पा भी उपलब्ध करा सकती है, किन्तु प्रतिभा का परिष्कार करने में अपना संकल्प, अपना समय और अपना पुरुषार्थ ही काम आता है। इस पौरुष में कोताही न करने के लिए गीताकार ने अनेक प्रसंगों पर विचारशीलों को प्रोत्साहित किया है। एक स्थान पर कहा गया है कि मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है। इसलिए अपने को उठाओ, गिराओ मत।

लकड़ियों को घिसकर आग पैदा कर लेने वाला मनुष्य अपने अंदर विद्यमान सशक्त प्रतिभा को अपने बलबूते बिना किसी का अहसान लिए प्रकट न कर सके, ऐसी कोई बात नहीं। आवश्यकता केवल इच्छा शक्ति एवं उत्कंठा की है। उसकी कमी न पड़ने दी जाए, तो मनुष्य अपनी उन क्षमता को प्रकट कर सकता है, जो न तो देवताओं से कम है और न दानवों से। जब वह घिनौने कार्य पर उतरता है, तो प्रेत-पिशाचों से भी भयंकर दीखता है। जब वह अपनी श्रेष्ठता को उभारने, कार्यान्वित करने में जुट जाता है, तो देवता भी उसे नमन करते हैं। यह भूलोक सौरमंडल के समस्त ग्रह-गोलकों से अधिक जीवंत, सुसंपन्न और शोभायमान माना जाता है, पर भुलाया यह भी नहीं जा सकता कि आदिकाल के इस अनगढ़, ऊबड़-खाबड़ धरातल को आज जैसी सुसज्जित स्थिति तक पहुँचाने का श्रेय केवल मानवी पुरुषार्थ को ही है। वह अनेक जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों का पालनकर्त्ता और आश्रयदाता है, फिर कोई कारण नहीं कि अपनी प्रस्तुत समर्थता को जगाने-उभारने के लिए यदि समुचित रूप से कटिबद्ध हो चले तो उस प्रतिभा का धनी न बन सके, जिसकी यश-गाथा गाने में लेखनी और वाणी को हार माननी पड़ती है।

मनुष्य प्रभावशाली तो है, पर साथ ही वह संबद्ध वातावरण से प्रभाव भी ग्रहण करता है। दुर्गंधित साँस लेने से सिर चकराने लगता है और सुगंधि का प्रभाव शांति, प्रसन्नता और प्रफुल्लता प्रदान करता है। बुरे लोगों के बीच बुराई से संचालित घटनाओं के मध्य समय गुजारने वाला, उनमें रुचि लेने वाला व्यक्ति क्रमशः पतन और पराभव के गर्त में ही गिरता जाता है, साथ ही यह भी सही है कि मनीषियों, चरित्रवानों, सत्साहसी लोगों के सम्पर्क में रहने पर उनका प्रभाव-अनुदान सहज ही खिंचता चला जाता है और व्यक्ति को उठाने-गिराने में असाधारण सहायता करता है। इन दिनों व्यक्ति और समाज में हीनता और निष्कृटता का ही बाहुल्य है। जहाँ इस प्रकार का वातावरण बहुलता दिए हुए हो, उससे यथासंभव बचना और असहयोग करना ही उचित है।

सज्जनता का सान्निध्य कठिन तो है और सत्प्रवृत्तियों की भी अपनी समर्थता जहाँ-तहाँ ही दिखाई देती है। ऐसी दशा में पुरातन अथवा अर्वाचीन सदाशयता का परिचय पुस्तकों के प्रसंगों, समाचारों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और उन संस्मरणों को आत्मसात करते हुए ऐसा अनुभव किया जा सकता है, मानो देवलोक के नंदनवन में विचरण किया जा रहा है। इस संबंध में स्वाध्याय और सत्संग का सहारा लिया जा सकता है। इतिहास में से वे पृष्ठ ढूँढ़े जा सकते हैं, जो स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए हैं और मानवी गरिमा को महिमामंडित करते हैं।

आत्म-विश्वास बड़ी चीज है। वह रस्सी को साँप और साँप को रस्सी बना सकने में समर्थ है। दूसरे लोगों का साथ न मिले, यह हो सकता है, किंतु अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार को मनमर्जी के अनुरूप सुधारा-उभारा जा सकता है। संकल्प-शक्ति की विवेचना करने वाले कहते हैं कि वह चट्टान को भी चटका देती है, कठोर को भी नरम बना देती है और उन साधनों को खींच बुलाती है, जिनकी आशा-अभिलाषा में जहाँ-तहाँ प्यासे कस्तूरी हिरण की तरह मारा-मारा फिरना पड़ता है।

मनुष्य यदि उतारू हो जाए तो दुष्कर्म भी कर गुजरता है, आत्महत्या तक के लिए उपाय अपना लेता है। फिर कोई कारण नहीं कि उत्थान का अभिलाषी अभीष्ट अभ्युदय के लिए सरंजाम न जुटा सके। दूसरों पर विश्वास करके उन्हें मित्र-सहयोगी बनाया जा सकता है। श्रद्धा के सहारे पाषाण-प्रतिमा में देवता प्रकट होते देखे गये हैं, फिर कोई कारण नहीं कि अपनी श्रेष्ठता को समझा-उभारा और सँजोया जा सके तो व्यक्ति ऐसी समुन्नत स्थिति तक न पहुँच सके, जिस तक जा पहुँचने वाले हर स्तर की सफलता अर्जित करते दिखाते हैं।

आत्म निरीक्षण को सतर्कतापूर्वक सँजोया जाता रहे तो वे खोटें भी दृष्टिगोचर होती हैं, जो आमतौर से छिपी रहती हैं और सूझ नहीं पड़तीं, किन्तु जिस प्रकार दूसरों का छिद्रान्वेषण करने में रहती है, वैसे ही अपने दोष-दुर्गुणों को बारीकी से खोजा और उन्हें अभिरुचि निरस्त करने के लिए समुचित साहस दिखाया जाए, तो कोई कारण नहीं कि उनसे छुटकारा पाने के उपरांत अपने को समुन्नत और सुसंस्कृत न बनाया जा सके। इसी प्रकार औरों की अपेक्षा अपने में जो विशिष्टताएँ दीख पड़ती हैं, उन्हें सींचने-सँभालने में उत्साहपूर्वक निरत रहा जाए तो कोई कारण नहीं कि व्यक्तित्व अधिक प्रगतिशील, अधिक प्रतिभा संपन्न न बन सके।

इस संदर्भ में सबसे बड़ा सुयोग इन दिनों है, जबकि नव-सृजन के लिए प्रचण्ड वातावरण बन रहा है। उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में नियंता का सारा ध्यान और प्रयास नियोजित है। ऐसे में हम भी उसके सहभागी बनकर अन्य सत्परिणामों के साथ ही, प्रतिभा-परिष्कार का लाभ तो हाथों-हाथ नकद धर्म की तरह प्राप्त होता हुआ सुनिश्चित रूप से अनुभव करेंगे।

नवयुवकों में नया उत्साह जगाने आये सामाजिक क्रांति के पुरोधा मा. अण्णा हजारे

महाराष्ट्र के पुणे महानगर से लगभग १०० कि.मी.दूर पहाड़ियों के बीच बसा है एक आदर्श गाँव-रालेगण सिद्धि। वहाँ ८, ९ तथा १० जून की तिथियों में युवा चेतना शिविर उत्साहपूर्वक हुआ। इसमें पुणे, मुम्बई, नाशिक, औरंगाबाद,

दीपयज्ञ की वैज्ञानिकता और सामाजिक उपयोगिता पर आदरणीय प्रणव पण्ड्या जी से चर्चा करते माननीय अण्णा हजारे

वडोदरा, सूरत, देवास (म.प्र.), बैंगलोर आदि के प्रबुद्ध युवाओं ने भाग लिया। उनमें से अधिकांश महानगरों तथा कारपोरेट जगत से सम्बद्ध थे। प्रतिभागियों में एक बात प्रमुख थी कि वे सभी युगपुरुष परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण अभियान से जुड़े हुए थे। बहुत से युवा इस बात से पहिचाने जा सकते थे कि वे अपने माता-पिता के बाद मानो लाल मशाल को थामने हेतु श्रद्धा के साथ तत्पर दीख रहे थे। यह भी कहा जा सकता था कि वे सभी अपनी पुरानी पीढ़ी वालों से अधिक वेगवान थे।

इस शिविर के दूसरे दिन के अंतिम सत्र में दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर सामाजिक क्रांति के लिए राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त माननीय अण्णा हजारे आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के साथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

युग संगीत के प्रारंभ होते ही आद. डॉ.साहब के साथ ही मुख्य अतिथि श्री अण्णा हजारे जी का भी मंच पर प्रवेश हुआ। युवा प्रतिनिधियों ने तिलक तथा पुष्पगुच्छ से दोनों का स्वागत किया। पहले आद.डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने समग्र क्रांति के लिए युवाओं का आवाहन किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने युवाओं के हृदयों को आगे बढ़ने-ऊँचा उठाने तथा राष्ट्र निर्माण के लिए अपने श्रम-प्रतिभा-समय लगाने की प्रेरणा दी।

मुख्य अतिथि माननीय अण्णा हजारे जी ने सत्तर वर्ष की अवस्था में भी युवाओं जैसे उत्साह से व्याख्यान दिया। उन्होंने विनम्रता पूर्वक यह स्वीकारा कि आदर्शों के जिस मार्ग पर वे प्राणपण से बढ़ रहे थे उसमें अगले दो कदम उन्हें आद.डॉ.साहब के उद्‍बोधन से मिल गए हैं। युवाओं को ध्येय निश्चित करने, चित्त शुद्धि पर सदैव ध्यान देने तथा सेवा कार्यों में प्रारंभ में मिलने वाले अपमान को पी जाने की बात उन्होंने एक वरिष्ठ अभिभावक के रूप में समझाई। सीधे-सादे शब्दों में कही हुई उनकी बातों ने शिविर में आये हुए भाइयों-बहिनों के हृदय को छुआ, क्योंकि उनमें कथनी-करनी और जीवन की एकता मूर्तिमान थी।

आद. डॉ.प्रणव पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य, गायत्री मंत्र चादर तथा स्मृति-चिन्ह भेंट कर उनका मान बढ़ाया। सभी युवा भाई-बहिन खड़े होकर उस दौरान आदरपूर्वक करतल ध्वनि करते रहे। माननीय अण्णा हजारे जी दीप महायज्ञ के दौरान भी मंच पर उपस्थित रहे।

दीप महायज्ञ में गायत्री महामंत्रों की आहुति के उपरांत त्र्यम्बक मंत्र से युग परिवर्तनकारी महाकाल को आहुतियाँ प्रदान की गईं। पूर्णाहुति से पूर्व आद. डॉ. साहब ने इस युवा चेतना शिविर के प्रतिभागियों से शपथ-संकल्प कराया। आरती के बाद उन्होंने सत्संकल्प का पाठ कराया। सत्संकल्प की शब्दावलियों से अण्णा जी बहुत प्रभावित हुए और मंच पर ही दीपयज्ञ की वह किताब उन्होंने आद.डॉ. साहब से ले ली।

(शिविर के विस्तृत समाचार पृष्ठ ७ पर देखें।)

राळेगॉव युवा चेतना शिविर में हुए वर्ष २००८-०९ के निर्धारण

- साधकों की संख्या बढ़ाना।
- मिशन के विस्तार का आकलन।
- संस्कृति मण्डलों की स्थापना।
- पर्वों को प्रेरणा प्रद ढंग से मनाना।
- अन्य समानधर्मी संस्थाओं को जानकारी।
- व्यापार जगत में प्रवेश।
- पर्यावरण वाहिनी का गठन।
- ४० पुस्तकों को अनेक भाषाओं में अनुवाद एवं घर-घर स्थापना।
- व्यसन मुक्ति आन्दोलन का विस्तार।
- महिलाओं के कार्य का (संस्कारादि) विस्तार।
- एक लाख युवाओं का सम्मेलन २०११ में।

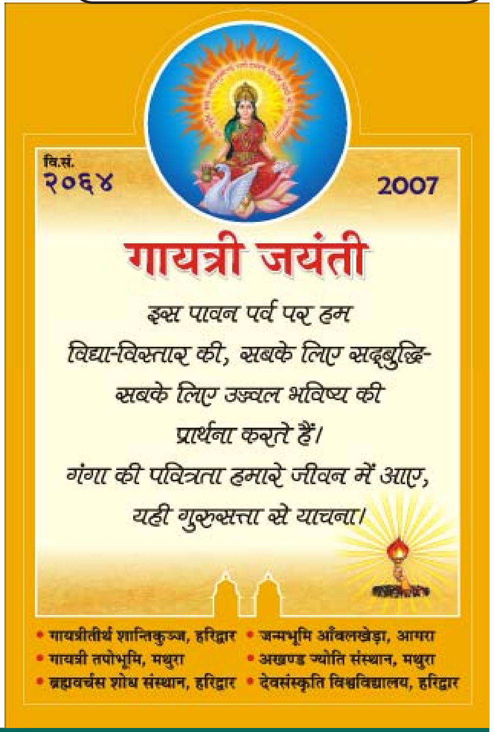

युग निर्माण आन्दोलन का मंत्र है 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा'। गायत्री की साधना से इसकी सिद्धि के लिए वांछित ऊर्जा प्राप्त होती है।